पाठ 6

सदाचार का तावीज़

– श्री हरिशंकर परसाई

5FUE7Q

भ्रष्टाचार आज के समय और समाज का बहुचर्चित विषय है और यह भ्रष्टाचार परसाई जी के रचनाकाल में भी अपने फलते–फूलते रूप में रहा होगा। तभी तो अपने तीखे व्यंग्य में भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप–तरीकों को व्यंग्यकार ने कथात्मक कलेवर में कुछ हकीकत और कुछ कल्पना के जरिये व्यवस्थागत खोखलेपन और दरबारी संस्कृति के साथ सघन रूप में उभारा है।

एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।

राजा ने एक दिन दरबारियों से कहा, ''प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।''

दरबारियों ने कहा, ''जब हुजूर को नहीं दिखा तो हमें कैसे दिख सकता है ?''

राजा ने कहा, ''नहीं, ऐसा नहीं है। कभी–कभी जो मुझे नहीं दिखता, वह तुम्हें दिखता होगा। जैसे मुझे बुरे सपने कभी नहीं दिखते, पर तुम्हें तो दिखते होंगे!''

दरबारियों ने कहा, ''जी, दिखते हैं। पर वे सपनों की बात हैं?''

राजा ने कहा, ''फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी देखें कि कैसा होता है। ''

एक दरबारी ने कहा, ''हुजूर! वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है, जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपें। ''

राजा ने 'विशेष' जाति के पाँच आदमी बुलाए और उनसे कहा, ''सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा–सा ले आना।''

विशेषज्ञों ने उसी दिन से छानबीन शुरू कर दी।

दो महीने के बाद वे फिर से दरबार में हाजिर हुए।

राजा ने पूछा, ''विशेषज्ञों! तुम्हारी जाँच पूरी हो गई?''

''जी सरकार।''

''क्या भ्रष्टाचार मिला?''

''जी, बहुत–सा मिला।''

राजा ने हाथ बढ़ाया, ''लाओ, मुझे बताओ, देखूँ, कैसा होता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हुजूर! वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।''

राजा सोच में पड़ गए। बोले, ''विशेषज्ञो, तुम कहते हो वह सूक्ष्म है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।''

एक दरबारी ने पूछा, ''पर वह है कहाँ ? कैसे अनुभव होता है?''

विशेषज्ञों ने जवाब दिया,''वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।''

''सिंहासन में है?'' कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए।

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ सरकार! सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव से दुगुने दाम का है, आधा पैसा बीचवाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यतः घूस के रूप में है।''

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा ने कहा, ''यह तो बड़ी चिन्ता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञों! तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाय तो उसकी घूस जाए। इसी तरह और बहुत–सी चीजें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है?''

राजा ने कहा, ''अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेगा।'' विशेषज्ञ चले गए।

राजा और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उस पर विचार किया। विचार करते–करते दिन बीतने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक दिन एक दरबारी ने कहा, ''महाराज! चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।''

राजा ने कहा, ''हाँ, मुझे रात को नींद नहीं आती।''

दूसरा दरबारी बोला, ''ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए, जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।''

राजा ने कहा, ''पर करें क्या ? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है? क्या उसे काम में लाना चाहिए?

दरबारियों ने कहा, ''महाराज! यह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट–फेर करने पड़ेंगे ! कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट–पुलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई–नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए, जिससे बिना कुछ उलट–फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।''

राजा साहब बोले, ''मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे? तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।''

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा, ''महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इन महान साधक को हम ले आए हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।''

साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया। राजा ने उसे देखा। बोले, ''हे साधु! इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?''

साधु ने समझाया,''महाराज! भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमानदारी के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी के चिन्तन में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस

आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। बात यह है कि तावीज़ में से भी सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है, तब यह तावीज की शक्ति उस आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ के ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही तावीज़ का गुण है, महाराज !''

दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ–उठकर तावीज को देखने लगे।

राजा ने खुश होकर कहा, ''मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन्! हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत परेशान थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से ताबिज़ों का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख–रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।''

एक मंत्री ने कहा, ''महाराज! राज्य क्यों झंझट में पड़े। मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।''

राजा को यह सुझाव पसन्द आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया।उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाने के लिए पेशगी मिल गए।

राज्य के अखबारों में खबरें छपीं, ''सदाचार के तावीज़ की खोज! तावीज़ बनाने का कारखाना खुला!''

लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हुक्म से हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक–एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे। एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। सोचा, ''देखें तो कि यह तावीज़ कैसे काम करता है।'' वह वेश बदलकर एक कार्यालय गए। उस दिन दो तारीख थी। एक दिन पहले ही तनख्वाह मिली थी।

वह एक कर्मचारी के पास गए और कोई काम बताकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे। कर्मचारी ने उन्हें डाँटा,'' भाग जाओ यहाँ से, घूस लेना पाप है।''

राजा बहुत खुश हुए। तावीज ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था। कुछ दिन बाद वे फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी– महीने का आखिरी दिन।

राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने लेकर जेब में रख लिया। राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोले,'' मैं तुम्हारा राजा हूँ। क्या तुम आज सदाचार का तावीज नहीं बाँधकर आए?''

''बाँधा है, सरकार! यह देखिए।''

उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया।

राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा कैसे हो गया ?

उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना। तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे, ''अरे, आज इकतीस है। आज तो ले लो।''

अभ्यास

पाठ से

1. दरबारियों को भ्रष्टाचार क्यों दिखाई नहीं पड़ रहा था ?
2. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार के बारे में राजा को क्या बताया ?
3. भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए विशेषज्ञों ने राजा को क्या सुझाव दिए।
4. भ्रष्टाचार मिटाने की योजना पढ़ने के बाद राजा की तबीयत क्यों खराब रहने लगी ?
5. साधु ने राजा को भ्रष्टाचार के बारे में क्या बताया ?
6. राजा ने ताबीज के प्रभाव को परखने के लिए क्या किया ?
7. राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की ?

पाठ से आगे

1. पाठ में उल्लेख किया गया है कि "भ्रष्टाचार सर्वत्र है, सर्वव्यापी है।" आप इस बात से कितना सहमत हैं? तर्क के साथ अपनी समझ को लिखिए।
2. क्या आपको लगता है कि ताबीज जैसे साधनों से भ्रष्टाचार खत्म किया जा सकता है? अगर हाँ तो कैसे और नहीं तो क्यों ?

5S8MNA

3. हमारे देश अथवा राज्य में भ्रष्टाचार फैलने के क्या कारण आपको प्रतीत होते हैं ? साथियों से बातचीत कर अपनी समझ को लिखिए।
4. 'भ्रष्टाचार का नमूना' से आप क्या समझते हैं ? आपने अपने आस–पास किन रूपों में भ्रष्टाचार के नमूने या स्वरूप को देखा है। उक्त घटना या विषय पर अपने विचार लिखिए।

भाषा से

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए पाठ के उन अंशों को खोजिए जहाँ इनका प्रयोग हुआ है और फिर संदर्भ को समझते हुए अर्थ लिखिए –
   - छानबीन करना, हवाले करना, खलल पड़ना, उलट–फेर, असमंजस में पड़ना।
2. निम्नांकित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–
   - मैं कल दरबार में जाऊँगा।
   - कल, साधु राजा से मिला।
   - विधाता किसी की आत्मा की ईमान में कल फिट कर देता है।

5SHIPX

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'कल' के तीन भिन्न अर्थ हैं। उसी प्रकार निम्नांकित समान उच्चारण वाले शब्दों के अर्थों को वाक्य में प्रयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए –

पद, आम, अंक, सोना, कनक, खर

योग्यता विस्तार

1. भ्रष्टाचार को समाप्त करने के आप सभी के पास कौन–कौन से नायाब तरीके हैं। आपस में बात कर अपने सुझाव को विस्तार से लिखिए।
2. व्यंग्य रचना क्या होती है ? यह साहित्य की अन्य विधाओं से कैसे भिन्न और मजेदार होती है? इस विषय पर शिक्षक से बातचीत कर किसी अन्य व्यंग्य विधा की रचना को खोज कर पढ़िए।

5SRERK

●●●